Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 6 | JUNE 2024

वंशावली लेखन व संवर्धन

चुन्नीलाल राव [1]

[1] **शोधार्थी, ज्योतिष विद्या पीठ महिला यूनिवर्सिटी.**

ABSTRACT:

वंशलेखकों को बढ़ावा देना व सामाज की पीढ़ीयों के स्रोतों का संरक्षण करना भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देते हुए वैज्ञानिक पद्धिति की और अग्रसर करना।

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE: 25th June 2024

PAPER PUBLISHED DATE: 26th June 2024

जयपुर वंशावली लेखन हम भारतीयो की परम्परा रही है वंशावली लेखन हर जाति, हर वर्ग के राव भाट जागा बरवा लोग अपने यजमान के घर–घर जाकर उसके सगे–संबन्धियों व गांव के लोगों की उपस्थिति में संक्षेप में सृष्टि कि रचना से लेकर उसके पूर्वजों के समय की इतिहास की ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व धार्मिक महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करते हुए उस व्यक्ति का वंश क्रम अपनी हस्तलिखित बहियां व पोथियों में आलेखित करना है। भारतीय वंशावली लेखन परम्परा में व्यक्ति के एतिहास को शुद्ध रूप से सहल कर रखने की प्रणाली व प्रयास है।

इनका उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग का पारंपरिक व वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करते हुए सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक व विविध तथ्यों का समावेश पोथियों या बहियों के रूप में इन्द्राज कर भावी पीढ़ी के लिए साक्ष्यों के रूप में सुरक्षित रखना है।

मानव इतिहास के विभिन्न पक्षों मूल वर्ण, कुल, जाति आदि की जानकारी हमें इन्ही वंशावलीयों के माध्यम से होती है।

वंशावली संवर्धन हेतु प्रस्तावित कार्य एवं गतिविधियां

वंशावलियाँ विभिन्न आयामों का अध्यन्न व अनुसंधान।

पारम्परिक वंशावलियों का संरक्षण–संवर्द्धन।

वंश लेखकों के निवास स्थानों का भ्रमण करना।

राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों का आयोजन।

विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन।

प्रशिक्षिण शिविरों का आयोजन पाठशालाओं का आयोजन।

शोध व प्रशिक्षिण को बढ़ावा देना।

पुस्ताकालायों की स्थापना कर उन्हें शोध अनुसंधान के रूप में बढ़ावा देना।

पाण्डुलिपियों का एक स्थान पर संग्रह व उनका डिजिटलाइजेशन।

वंशावलियों एवं परम्पराओं के विविध आयामों पर शोध व प्रकाशन।

वंशावलियों के वैज्ञानिक रूप से संरक्षण उन्नत स्याही पर शोध इत्यादि सम्बंधित कार्यो हेतु प्रयोगशाला कि स्थापना।

इस ऐतिहासिक धरोवर के प्रति जन जाग्रति पैदा करना व इसको बढ़ावा देना।

समान उद्देश्यों पर कार्य करने वाले सरकारी व गैरसरकारी संस्थानों के साथ मिलकर विभिन्न अध्यन्न, शोध, परियोजनाओं, प्रकाशंन इत्यादि पर कार्य करना, वंशावली लेखन में अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए उसके संरक्षण हेतु आज भी निरन्तर प्रयास जारी है।

वंश लेखक – बड़वा, जागा, राव, भाट ये सारे नाम वंश लेखक के कार्यरत है। जिन्होंने वर्षो पुरानी परम्परा को निभाते हुए उनका अनुसरण करते हुए इस कार्य को पुरी श्रद्धा व भाव से पूर्णताः प्रदान की है।

किसी जमाने में जो विश्व गुरू के समकक्ष जनकल्याण के कार्य में रत थे वहीं आज अपने आजीवीका पूर्ति में लगने के कारण इस कार्य से विमुख होने लगे है। अतः इन वंशावली संर्वधन के द्वारा हम इन लेखकों के उद्धार का कार्य कर सकेगें तथा इन्हें बढ़ावा दे सके।

वंश परम्परा के इतिहास लेखक वंशावलियों वृक्ष परम्परा के इतिहास वंशवृक्ष के जानकारी देने वाले भारतीय समाज में सर्वाधिक श्रद्धेय और सम्मानीय माने गए है। उन्होंने भारतीय इतिहास कि हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ तो तैयार कि है। साथ ही आम आदमी के वृक्ष के इतिहास को निरन्तर सुरक्षित रखा और उसे आज भी अभिवृद्धि किए जा रहे है। परंतु ऐसे सामाजिक, पारिवारिक एतिहास और वंशावलियों के रचियताओं को आज भारतीय समाज ने विस्मृत ही नहीं कर दिया बल्कि वे काल की अंधेरी गलियों में धीरे–धीरे गुम होते जा रहे है।

प्राचीन काल में भोजपत्र, ताम्रपत्र, शिलालेख के माध्यम से वंशावली लेखकों ने इसे लिखित रूप दिया जिसे वर्तमान काल में कागज की बहियों पर लिखा जा रहा है। जब कि विदेशों में पुरानी लिखित सामग्री पर शोध किये जा रहे है।

हमे ज्ञात हैं कि मुगल काल में विदेशी आंक्रताओं ने पुराने ग्रंथ, धार्मिक पुस्तकें, साहित्य और वंशावली कि पोथियों को बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। फिर भी वंशावली लेखकों ने अपनी वंशावली को अपने प्राणों से भी अधिक मूल्यवान मानते हुए इनकी रक्षा की। बाद में अंग्रेजों ने भी इन लेखकों को प्रताड़ित किया और इनकों दबाने की पुरी कोशिश की।

REFERENCES

1. रावजी की बहियां

2. सामाजिक व साहित्यिक ग्रंथ दि एस्ट्रोनोमिकल कोड ऑफ दि ऋगवेद, मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली।